



HINDI A1 – STANDARD LEVEL – PAPER 1
HINDI A1 – NIVEAU MOYEN – ÉPREUVE 1
HINDI A1 – NIVEL MEDIO – PRUEBA 1

Thursday 13 May 2010 (afternoon)
Jeudi 13 mai 2010 (après-midi)
Jueves 13 de mayo de 2010 (tarde)

1 hour 30 minutes / 1 heure 30 minutes / 1 hora 30 minutos

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a commentary on one passage only. It is not compulsory for you to respond directly to the guiding questions provided. However, you may use them if you wish.

INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N'ouvrez pas cette épreuve avant d'y être autorisé(e).
- Rédigez un commentaire sur un seul des passages. Le commentaire ne doit pas nécessairement répondre aux questions d'orientation fournies. Vous pouvez toutefois les utiliser si vous le désirez.

INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un comentario sobre un solo fragmento. No es obligatorio responder directamente a las preguntas que se ofrecen a modo de guía. Sin embargo, puede usarlas si lo desea.

नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, (१) तथा (२)। इन दोनों में से किसी एक पर व्याख्या लिखिए।

१.

जीवनज्योति

- “इस घर में रूपये के पेड़ नहीं लगा रखे हैं मैंने कि जब चाहूँ नोट तोड़तोड़ कर तुम सब की हर इच्छा पूरी करता रहूँ। जूतियों के नीचे दब कर मुनीमगीरी करता हूँ उस सेठ की बारह घंटे... और उस पर से रोजरोज की फरमाइशें, आज किताब नहीं है, कल कापियाँ खत्म हो गई, किसी की यूनिफार्म फट गई तो किसी का स्कूलबैग। तंग आ गया हूँ इन सब की पढ़ाई लिखाई से।” सुमित्रा इस घटना से हतप्रभ थी। उसने आत्मीयता के शीतल जल से इस धधकती ज्वाला को शांत करने की भरसक कोशिश की थी। अब आप से अपनी जरूरतों को नहीं कहेंगे तो क्या दूसरे से कहेंगे। “तो क्या करूँ मैं ? चोरी करूँ, या डाका डालूँ या आत्महत्या कर लूँ इन की जरूरतों की खातिर... और यह सब तुम्हारी शह का नतीजा है। एक पल को पसर आए सन्नाटे के बाद दूसरे ही पल यह बवंडर ज्योति की ओर बढ़ चला था, “और तू, किस ने कहा था तुझ से हर महीने फार्म भरने, परीक्षा फार्म भरने... कभी रिटेन, कभी पीटी तो कभी इंटरव्यू, हर महीने मेमसाहब की सवारी तैयार। कभी दिल्ली, कभी पटना, कभी कोलकता”... तिरस्कार का यह अपदंश बिल्कुल नया था ज्योति के लिए।
- १० भावनाओं की यह उमड़धुमड़ सुमित्रा की नज़रों से छिप न सकी थी। कचोट उठा था माँ का दिल, “देखिए, जो कहना है आप मुझ से कहिए न... ज्योति अब बच्ची नहीं रही, बड़ी हो गई है। एक जवान बेटी को भला इस तरह दुत्कारना... कुछ होश है आपको ? होश है तभी तो बोल रहा हूँ कि आज अगर इस की जगह घर में बेटा होता तो कमा कर लाता। परिवार का सहारा होता। मगर यह लड़की तो एक अभिशाप है... “हद करते हैं आप भी, अगर यह लड़की है तो क्या यह इस का दोष है ? “हाँ, यह लड़की है। यही दोष है इसका। और इस घर में तीन तीन लड़कियाँ ही पैदा की तुमने। कहते हुए मुंशीजी का स्वर रूंधने लगा था। आज पता नहीं क्या हो गया है आपको। आप जैसा धैर्यवान और समझदार समझदार इन्सान भी ऐसी घटिया बात सोच सकता है, मैंने तो कभी कल्पना तक नहीं की थी। तो मैंने कब कल्पना की थी कि सीमित आय की जरूरतें इतनी असीमित हो जाएँगी। तुम्हीं बताओ कि खानेदाने के लिए अपनी पगार खर्च करूँ या पेट पर पत्थर बाँध कर इसके ब्याह के लिए रोकड़े जमा करूँ। उस पर से इस लड़की के यह चोंचले कि बडा आफिसर ही बनन है। कंगले की ड्योढ़ी पर बैठकर आसमान झुकाने चली है। जब तक जिंदा रहेगी इस बाप की छाती पर मूँग ही तो दलेगी। ज्योति इस
- २० बार दिल्ली से सिविल सर्विसेज का साक्षात्कार दे आई थी। संतुष्ट तो थी ही इस परीक्षा से, मगर उसक भरोसे बैठ जाना कर्हों की बुद्धिमानी होती। कमरे में कुहनियों के बीच मुँह छिपा कर ज्योति रोती ही जा रही थी। माँ का स्नेहिल स्पर्श भी आज उसे ममताविहीन लग रहा था। उसे लग रहा था जैसे वह एक लाश है। आँख लग ही गई थी कि अचानक चिहुँक कर जाग गई ज्योति। अचानक ही उसका चेहरा सख्त हो गया था। एक निर्णय ने उसके भय के सारे अंतर्द्वंदों को धो डाला था और दरवाजे का सांकल खोल, अमावस की इस काली निशा में वह गुम हो गई थी। वह अपने घर से जितनी दूर होती जा रही
- २५ थी बाबू जी का स्वर अनुगूँज अंतस में और अधिक शोर मचाने लगा था। अचानक ज्योति को लगा कि बाबूजी की आवाज के साथसाथ कहीं से कोई दूसरा स्वर भी घुलमिल कर आ रहा था, ज्योति... ज्योति। और एक झटके के साथ आगे बढ़ी तो अनजान रास्ता और उस पर से किसी अदृश्य रहस्य की उपस्थिति का एहसास। इसी घबराहट में किसी कटे पेड़ के टूट से जा टकराई और दर्द से बिलबिला उठी थी। फिर वही आवाज, “चोट लग गई न। बिना सोचे समझे तुम कितने दुर्गम रास्ते पर निकल पड़ी हो।” मर नहीं जाऊँगी इन छोटीमोटी ठोकड़ों से। क्रोध के मनोवेग से चीखती चिल्लाती हुई बड़बड़ाने लगी
- ३० थी। बहुत चोटें सही है मैंने। मर तो नहीं गई मैं। हाँ मरूँगी, आत्महत्या करूँगी। मुझे चोट लगे, तुम्हें इस से क्या मतलब। नहीं कोई मतलब नहीं। जानती हो ज्योति, आत्महत्या में ऐसा भी होता है कि कई बार आदमी मर नहीं पाता। टूटफूट कर एक लंगड़ेलूले, अपंगता की जिंदगी जीता है। तब वह दोबारा आत्महत्या का प्रयास भी नहीं करता। क्योंकि एक बार के प्रयास का उसे कठोर एहसास जो उसे होता है। लेकिन तुम हो कौन जो परत दर परत मुझसे सब कुछ जान लेना चाहते हो।

में जीवन हूँ। बिल्कुल सत्य और संघर्षों से भरा हुआ। कोई मुझे प्यार का गीत समझकर गुनगुनाता है तो कोई पहेली, ३७ कोई जंग। विचारों की इस उमड़धुमड़ में ज्योति इतना गुम हो गई कि उसे पता ही नहीं चला कि जंगल कब समाप्त हो गया। हर रात की सुबह होती है। उस रात की भी सुबह हुई। घर में व्याप्त खामोशी को किसी ने झंझोड़ा था। पोस्टमैन लिफाफा थामे बड़बड़ाया, रजिस्टर्ड डाक है, लीजिए। खुशी से चहक उठे थे मुंशीजी। “ये देख तेरा नियुक्ति पत्र है।” पढ़ न। पुलिस की सबसे बड़ी आफीसर की नौकरी मिल गई है तुझे, ज्योति सहाय, आई.पी.एस. मनप्राण में रचबस गई इस आवाज को अंतस में महसूस किया था ज्योति ने। आँखे बंद कर के वह अपने मन के अंदर झॉक आई थी। जहाँ सचमुच मुसकराता ४० उस का प्यारा जीवन था-जीवनज्योति।

मनोज सिंहा, सरिता (नवंबर २००७)

- मुंशीजी और सुमित्रा के आपसी संवाद एवं संबंधों के आधार पर सामाजिक समस्या के प्रस्तुतीकरण में लेखक कहीं तक सफल रहा है ?
- लेखक द्वारा ज्योति के मानसिक अंतर्द्वंद्व एवं मनोभाव पर विचार करते हुए बताइए कि पात्रों के चरित्र चित्रण में लेखक कहीं तक सफल रहा है ?
- उपर्युक्त गद्य के शीर्षक की सार्थकता पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
- प्रस्तुत गद्यांश की भाषा - शैली के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

२.

कब्जा ...

- बचपन से लड़की में
 भय रोपा गया
 लड़के में हिम्मत
 लड़की को दुपट्टे से ढका गया
- ५ और लड़के की
 पीठ थपथपाई गयी
 दोनों भाई-बहन थे।
 पर अधिकारों के धरातल पर
 उन्हें विरासत में
- १० दो अलग-अलग संस्कृतियों का
 इतिहास सौंपा गया
 लड़की के कोमल मस्तिष्क को
 चालाकी से गढ़ा गया
 पुरुष के अनुसार ढाला गया
- १५ उसके अधिकारों व दायरों की
 लक्ष्मण रेखा
 खुद पिता ने खींची
 मर्यादा की कठोर परम्पराएँ
 भाई ने दी
- २० लड़की की अभिव्यक्ति कैद थी
 लड़का बंधनमुक्त
 मौन के मुख होने की
 सारी संभावनाएँ नष्ट करते हुए
 खुश थे पिता
- २५ कि बिटिया को कोई कष्ट नहीं होगा
 भविष्य में
 और बिटिया वर्तमान में
 तिल-तिल कर मर रही थी
 बेटा अपने सपनों के पंख फैला
- ३० आसमान में उड़ रहा था
 और बेटी को पाँव टिकाने के लिए भी
 जिस ज़मीन की जरूरत थी
 उस पर किसी पुरुष का कब्जा था।

रंजना श्रीवास्तव, परिकथा (जुलाई-अगस्त २००८)

- इस कविता के शीर्षक की सार्थकता एवं चयन पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
 - कविता का केन्द्रीय भाव को कवि कहीं तक प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर पाया है ?
 - कविता की भाषा, शैली तथा प्रस्तुतिकरण के बारे में आप क्या कहना चाहते हैं ?
 - इस कविता की विषयवस्तु ने आपके मन पर क्या प्रभाव डाला है ?
-